आगम-अनुयोग

भाग-1

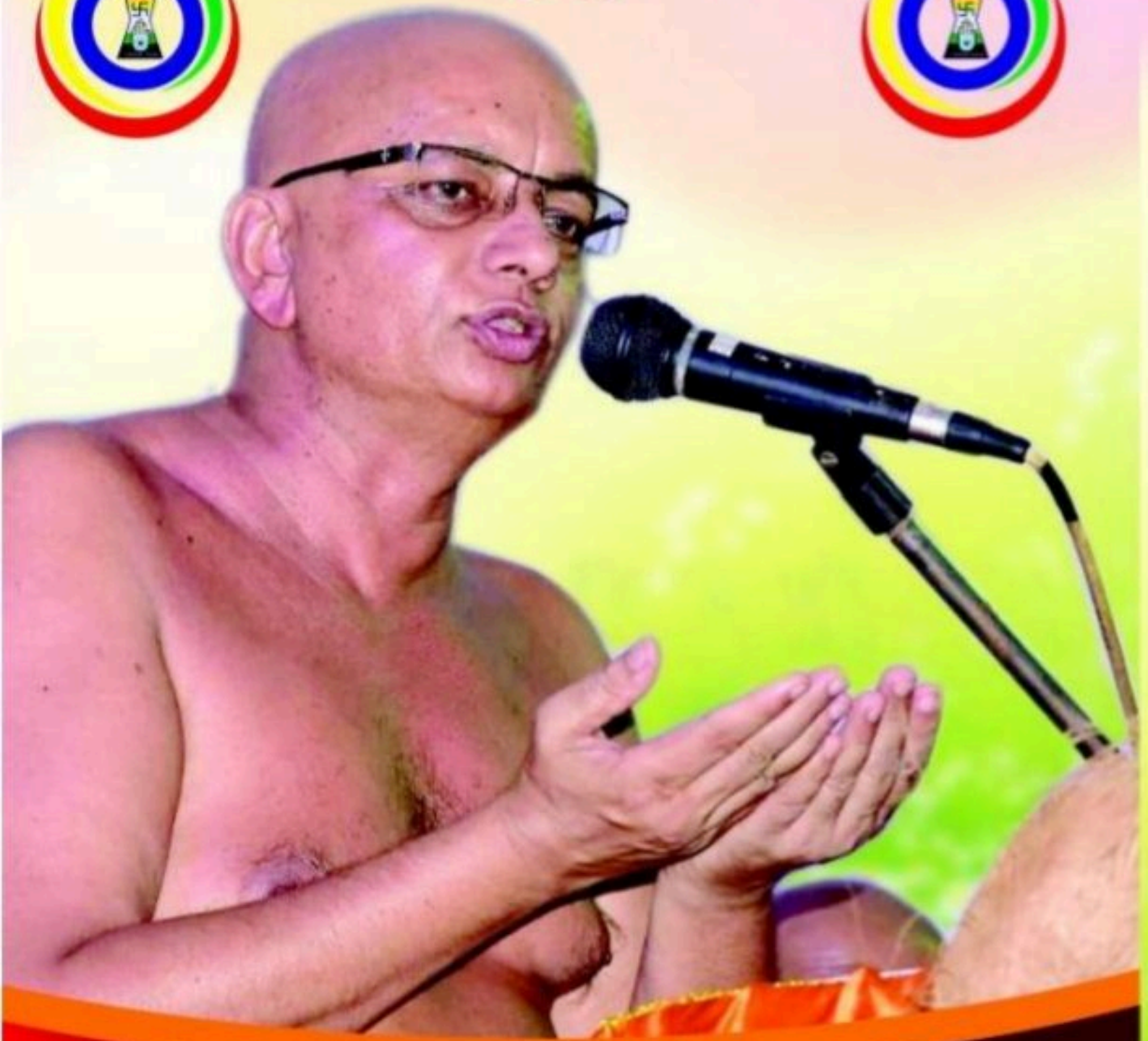

रचयिता-आचार्यश्री 108 आर्जवसागर

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

जैन ग्रंथों का संपूर्ण सार : आगम-अनुयोग

आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित परम पूज्य आध्यात्म योगी आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागरजी महाराज ने मोक्षमार्गोपयोगी अनेक बहुमूल्य कृतियों की रचना की है; जिनमें 'आगम-अनुयोग' एक ऐसी अनूठी, अद्वितीय (Unique)कृति है, जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों (प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग) रूप ग्रंथों का सार समाहित है। यह बहुमूल्य कृति स्वाध्याय प्रेमी श्रावकों के लिये अत्यंत मूल्यवान एवं बहुउपयोगी है। इसके माध्यम से आचार्यश्री ने जैन आगम की, लोक-अलोक की विस्तृत जानकारी का समावेश इसमें किया गया है। यह कृति प्रश्नोत्तरी रूप में अत्यंत सरल शब्दों में लिखित है। इसके माध्यम से सम्यग्ज्ञान भूषण, सिद्धांत भूषण पदवी की उपाधि भी प्राप्त हो सकती है। आगम अनुयोग (प्रश्नोत्तर प्रदीप) का मुख्य उद्देश्य भव्यजीवों को स्वाध्याय के माध्यम से आगम ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कराना है।

गुरुवर की यह अनूठी कृति संपूर्ण जैन दर्शन को बताने वाली है एवं अत्यंत सरल शब्दों में आगम ग्रन्थों का मुख्य ज्ञान कराने वाली है। हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें गुरुवर रचित इस 'आगम-अनुयोग' कृति को पढ़ने का, इसका स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

'आगम-अनुयोग' कृति में करीब 1274 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रथमानुयोग एवं करणानुयोग का विशेष वर्णन किया है।

त्रेसठ (63) शलाका पुरुषों, कुलकरों आदि महापुरुषों संबंधी पुराणों का संपूर्ण सारांश 'आगम-अनुयोग' में प्रथमानुयोग में लगभग 404 प्रश्नों में समाहित है। यह प्रथमानुयोग का ज्ञान भव्यों के लिये अत्यंत उपकारी है। इसके ज्ञान से जीवों को सम्यग्दर्शनादि रूप बोधि और धर्मध्यान, शुक्लध्यान रूप समाधि की प्राप्ति होती है। इसी अनुयोग में भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था, पुरुषार्थ की भी विस्तृत विवेचन है।

आचार्य गुरुदेव ने 63 शलाका पुरुषों में भी सर्वप्रथम तीर्थंकर महापुरुषों का वर्णन किया है कि तीर्थंकर कौन होते हैं? किस तरह तीर्थंकर प्रकृति का संचय होता है? भरत क्षेत्र, विदेह क्षेत्र संबंधी कितने-कितने तीर्थंकर होते हैं? किस तरह सौधर्मेन्द्र-शचि इन्द्राणि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभु का जन्मोत्सव मनाते हैं? किस कारण से उन्हें वैराग्य होता है? किस तरह अयोध्या की रचना होती है? कैसे उन्हें केवलज्ञान प्राप्त होता है? और उनका समवशरण कितना विशाल विस्तार वाला होता है? कौन से जीव उस समवशरण में उनकी दिव्यध्वनि रूप उपदेश को ग्रहण करते हैं? आदि विशेष शंकाओं का समाधान इस प्रथमानुयोग खण्ड में प्रश्नोत्तर के माध्यम से किया गया है। तीर्थंकरों के विशेष वर्णन के बाद चक्रवर्ती और उनका वैभव आदि एवं बलदेव, नारायण, प्रतिनारायण, कामदेव आदि महापुरुषों का भी उल्लेख इसमें समाहित है।

करणानुयोग का वर्णन भी प्रश्न 405 से लेकर 1274 प्रश्न तक किया गया है, जिसमें विशेष रूप से तीन लोक का वर्णन समाहित है। अर्थात् लोक-अलोक का विभाग, गणित, उसकी रचना एवं उसमें जीवों का निवास, युग परिवर्तन, प्ररूपणा आदि का ज्ञान प्राप्त कराने वाला यह करणानुयोग खण्ड है। तीन लोक (ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक) के वर्णन में अधोलोक में नरकादि एवं उनके पटलों का विस्तार, वहाँ का वातावरण, नरक के दुःख वहाँ उत्पन्न होने वाले जीवों की लेश्या, नरकों की आयु एवं वहाँ कौन से जीव किस कारण से जन्म लेते हैं आदि का भी मुख्यतः से वर्णन किया गया है। मध्यलोक में भी युग परिवर्तन, कल्पकाल, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल आदि का भी विशेष वर्णन है। एवं देवों की विस्तृत जानकारी भी इसमें समाहित है। (सर्वद्वीप और समुद्र, उनपर स्थित पर्वतों का, भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था का, अकृत्रिम चैत्यालयों का भी विशेष वर्णन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से किया गया है।)

यह 'आगम-अनुयोग' प्रश्नोत्तर-प्रदीप हम भव्य जीवों को कल्याणकारी रूप है यह कृति मोक्ष रूपी पद (शिवालय) को शीघ्र ही प्रदान करायेगी।

जिनके दर्शन से नयन धन्य हो जाते हैं, जिनको आहार दान देने से हाथ धन्य हो जाते हैं, जिनका सुमरण करने से मन धन्य हो जाता है, जिनका गुणगान करने से कण्ठ धन्य हो जाता है, जिनके पास जाने से जीवन धन्य हो जाता है। ऐसे आगम-अनुयोग ग्रन्थ के प्रणेता परमोपकारी, धर्म प्रभावक, षोडशकारण व्रत प्रणेता, मोक्षमार्ग उपदेशक, आध्यात्मिक संत आचार्य गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के चरणों में बारंबार नमोस्तु.... नमोस्तु.... नमोस्तु।

इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह

दिनांक- 3 मई से 2 जून 2022 तक

आयोजक- गुरु आर्जव वाणी एवं भाव विज्ञान परिवार, भोपाल

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

दिनांक- 3 मई से 2 जून 2022 तक

पावन प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

इस शिविर में भाग लेने वाले सभी उत्तीर्ण प्रतियोगीयों को प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा।

प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतियोगियों को सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी से एवं आकर्षक पुरुस्कार से भी अलंकृत किया जाएगा।

- आगम अनुयोग पुस्तक की pdf आप तक whatspp के माध्यम से पहुँचा दी जाएगी।अथवा आप www.aarjavvani.com वेबसाइट से भी डाऊनलोड कर सकते हैं।
- पुस्तक के अंत में कुल 10 पेपर दिए गए हैं। जिनके उत्तर आपको उसी पुस्तक में से देखकर लिखना है।
- प्रत्येक 100 प्रश्नों में से 1 प्रश्न पत्र तैयार किया गया है।इस तरह 100 प्रश्नों में से लिखने होंगे 20 प्रश्नों के उत्तर
- इस तरह लिखने होंगे करीब 1000 प्रश्नों में से 200 प्रश्नों के उत्तर
- इस शिविर में भाग लेने हेतु नीचे लिखे नंबर पर 2 मई तक सूचना दे देवें।
- आपको आर्जव वाणी प्रतियोगिता ग्रुप में जोड़ दिया जाएगा। जिससे आपको इस शिविर संबंधी सभी जानकारी/ अपडेट मिलती रहेगी।

प्रतियोगिता का उद्देश्य शास्त्र स्वाध्याय द्वारा ज्ञान के क्षयोपशम में वृद्धि करना होता है। इसलिए आगे भी ऐसे ही स्वाध्याय करते रहें और प्रतियोगिता के विजेता बनें।

9174843674

- प्रत्येक 3 दिन में 1 प्रश्न पत्र के उत्तर लिखकर भेजना होंगें। इस तरह 30 दिन में 10 प्रश्न पत्र लिखना होंगें।
- आप इस प्रश्नपत्र को रजिस्टर के पेपर में लिखकर pdf के माध्यम से whatspp पर भी भेज सकते हैं।

नोट- 13 वर्ष से ऊपर आयु वाले प्रतियोगी ही भाग ले सकते हैं। व पेपर भेजने की समय सीमा को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

अध्याय - 8. जीवों की अवगाहनादि

प्र. 731 वलयाकार स्वयंभूरमण समुद्र के आगे इस मध्यलोक सम्बन्धी कौन-सी रचना है? और वहाँ मुख्यतः कौन-से जीवों का सद्भाव पाया जाता है?

उत्तर स्वयंभूरमण समुद्र के आगे मध्यलोक सम्बन्धी त्रस नाड़ी के शेष भाग सम्बन्धी चारों विशाल कोनों में कर्म भूमि-सम भूमि एवं तादृश तिर्यंचों का सद्भाव पाया जाता है।

प्र.732 मध्यलोक के अन्तिम चतुर् कोणों के तिर्यंच किस तरह के होते हैं?

उत्तर मध्यलोक के अन्तिम चतुर् कोणों में उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यंच पाये जाते हैं।

प्र.733 तिर्यंचों की उत्कृष्ट अवगाहना कहाँ-कहाँ पाई जाती है?

उत्तर तिर्यंचों की उत्कृष्ट अवगाहना; स्वयंभूरमण द्वीप के स्वयंप्रभ पर्वत के आगे (बाहरी) भाग में स्थित स्वयंभूरमण द्वीप, स्वयंभूरमण समुद्र में और अन्तिम चारों कोनों में रहने वाले तिर्यंचों के पायी जाती है।

प्र.734 स्वयंभूरमण समुद्र में एकेन्द्रिय धारक कौन-से जीव की कितनी उत्कृष्ट अवगाहना पायी जाती है?

उत्तर स्वयंभूरमण समुद्र में एकेन्द्रिय वनस्पतिकायिक कमल की उत्कृष्ट शरीर-अवगाहना दो कोस अधिक एक हजार योजन पायी जाती है।

प्र.735 स्वयंप्रभ पर्वत के बाद द्वीन्द्रिय आदिक जीवों की उत्कृष्ट अवगाहना का प्रमाण क्या है?

उत्तर स्वयंप्रभ पर्वत के बाद द्वीन्द्रियों में शंख का बारह योजन अवगाहना वाला शरीर है, त्रीन्द्रियों में गोपालिका या खर्जूरक प्राणी का शरीर तीन कोश का है, चतुरिन्द्रियों में भ्रमर का शरीर एक योजन का अर्थात् चार कोश का है और पंचेन्द्रियों में महामत्स्य का उत्कृष्ट शरीर एक हजार योजन लम्बा है।

प्र.736 जिस तरह द्वीन्द्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय तक के जीव संमूर्च्छन होते हैं उसी तरह पंचेन्द्रियों में महामत्स्य भी क्या संमूर्च्छन होता है?

उत्तर हाँ! महामत्स्य भी संमूर्च्छन होता है।

प्र.737 सम्मूर्च्छन जीव का लक्षण क्या है?

उत्तर गर्भ और उपपाद जन्म के अतिरिक्त अन्य योनि से उत्पन्न होने वाले जीव अर्थात् अनेक पुद्गल परमाणुओं के मिल जाने पर जन्म लेने वाले जीव सम्मूर्च्छन जीव कहलाते हैं।

प्र.738 जम्बूद्वीप को वलयाकार (चूड़ी आकार) रूप से वेष्टित करने वाले एवं दुगने-दुगने विस्तार वाले असंख्यात समुद्र व द्वीपों की परिधि (गोलाई रूप किनारे) का ज्ञान करने हेतु जम्बूद्वीप की परिधि का आगमानुसार विस्तार कितना है?

उत्तर जम्बूद्वीप का विस्तार जब एक लाख योजन है (अर्थात् दो हजार कोश का एक महायोजन ग्रहण करना चाहिए) तब जम्बूद्वीप की परिधि का प्रमाण तीन लाख सोलह हजार, दो सौ सत्ताईस योजन, तीन

कोश, अट्ठाईस सौ धनुष साढ़े तेरह अंगुल और एक जौ प्रमाण है। (मू.चा.भाग 1,पृ.228)

प्र.739 लवण समुद्र में मत्स्य कितने प्रमाण वाले होते हैं?

उत्तर लवण समुद्र में मत्स्य अठारह योजन की अवगाहना वाले हैं तथा गंगा, सिन्धु आदि नदियों के प्रवेश स्थान में अर्थात् समुद्र के प्रारम्भ में मत्स्य नव योजन लम्बे हैं।

प्र.740 कालोदधि समुद्र में मत्स्यों की अवगाहना का प्रमाण क्या है?

उत्तर कालोदधि समुद्र में मत्स्य छत्तीस योजन के हैं और वहाँ भी समुद्र के प्रारम्भ में नदियों के प्रवेश स्थान में मत्स्यों की अवगाहना अठारह योजन की है। (मत्स्यों की यह अवगाहना उपलक्षण समझकर अन्य जलचरों की अवगाहना का भी प्रमाण समझ लेना चाहिए)(मू.चा. भाग 2)

प्र.741 लवणोदधि, कालोदधि और स्वयंभूरमण समुद्र के अतिरिक्त शेष समुद्रों में क्या मत्स्य आदि जलचर जीव होते हैं या नहीं? और अगर नहीं तो क्यों नहीं?

उत्तर उपर्युक्त तीन समुद्रों के अतिरिक्त शेष समुद्रों में मत्स्य, मकर एवं अन्य द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय-पर्यन्त कोई भी जलचर जीव नहीं होते हैं क्योंकि अन्य समुद्रों में जघन्य भोगभूमि हुआ करती है।

प्र.742 स्वयंभूरमण समुद्र में जलचर जीवों की अवगाहना का उत्कृष्ट प्रमाण अगर एक हजार योजन का है तो जलचरों में जघन्य अवगाहना वाला जीव कौन-सा है?

उत्तर जलचरों में सबसे जघन्य अवगाहना धारक जीव कुन्थु होता है। (मू.चा. भाग 2)

प्र.743 द्वि-इन्द्रियादिक पर्याप्तक कौन-से जीव कितनी जघन्य अवगाहना के धारक होते हैं?

उत्तर द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवों में अनुंधरी, कुन्थु, काणमक्षिका, सिक्थक (तन्दुल) मत्स्य के क्रम से जघन्य अवगाहना होती है। इसमें प्रथम की अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है और पूर्व-पूर्व की अपेक्षा उत्तर-उत्तर की अवगाहना क्रम से संख्यातगुणी-संख्यातगुणी अधिक अधिक है। (गो.सा.जी.का.गा.96)

प्र.744 अपर्याप्त और पर्याप्त का आश्रय कर जलचर, स्थलचर और नभचरों के शरीर का प्रमाण कितना है?

उत्तर जलचर अपर्याप्तक, स्थलचर अपर्याप्तक और नभचर अपर्याप्तक सम्मूर्च्छन तिर्यंचों की जघन्य अवगाहना एक वितस्ति अर्थात् बारह अंगुल प्रमाण है। (यह प्रमाण स्वयंभूरमण समुद्र व वहाँ कर्मभूमि की अपेक्षा से जानना।)

प्र.745 जलचर गर्भज अपर्याप्तक और थलचर गर्भज अपर्याप्तकों की उत्कृष्ट देह अवगाहना नभचर, थलचर संमूर्च्छन पर्याप्तकों की उत्कृष्ट देह अवगाहना तथा नभचर और गर्भज पर्याप्तक-अपर्याप्तकों की उत्कृष्ट देह अवगाहना कितनी है? (अन्तिम द्वीप की कर्मभूमि की अपेक्षा)

उत्तर इन उपर्युक्त जीवों की उत्कृष्ट देह अवगाहना धनुष पृथक्त्व प्रमाण है।

प्र.746 पृथक्त्व शब्द का तात्पर्य क्या है?

उत्तर पृथक्त्व शब्द का अर्थ तीन के ऊपर और नव से नीचे की संख्या है जिसकी पृथक्त्व संज्ञा है।

प्र.747 जलचर, थलचर, गर्भज पर्याप्तकों के उत्कृष्ट शरीर का प्रमाण कितना है?

उत्तर जलचर, गर्भज पर्याप्तकों का उत्कृष्ट शरीर (अन्तिम समुद्र की अपेक्षा) पाँच सौ योजन प्रमाण है। स्थलचर, गर्भज पर्याप्तक अर्थात् (उत्कृष्ट) भोगभूमिज तिर्यंचों का शरीर तीन कोश प्रमाण है।

प्र.748 पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और मनुष्य इनके उत्कृष्ट शरीर का प्रमाण क्या है?

उत्तर सूक्ष्म और बादर पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक जीव द्रव्य अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण शरीर वाले हैं। और पर्याप्तक मनुष्यों का उत्कृष्ट शरीर भोगभूमि की अपेक्षा तीन कोश प्रमाण वाला है।

प्र.749 द्रव्य अंगुल से क्या तात्पर्य है? और उसका असंख्यातवाँ भाग क्या है?

उत्तर आठ जौ से निष्पन्न अंगुल में असंख्यात आकाश प्रदेश हैं उसके असंख्यात भाग करने पर एक भाग में भी असंख्यात प्रदेश हैं। इस असंख्यातवें भाग को द्रव्यांगुल का असंख्यातवाँ भाग कहते हैं।

प्र.750 सर्व जघन्य शरीर किन जीवों का होता है? और कब?

उत्तर सर्व जघन्य शरीर सूक्ष्म निगोदिया अपर्याप्तक जीव के उत्पन्न होने के तृतीय समय में होता है।

प्र.751 सर्व जघन्य शरीर होने में तृतीय समय से क्या तात्पर्य है?

उत्तर सूक्ष्म निगोदिया लब्ध अपर्याप्तक जीव के जन्म लेने के तृतीय समय में सर्व जघन्य शरीर होता है, क्योंकि प्रथम और द्वितीय समय में प्रदेशों का विस्फूर्जन-फैलाव होने से अथवा पूर्व शरीर के समीपवर्ती होने से बड़ा शरीर रहता है। पुनः तृतीय समय में प्रदेशों का निचय के अनुसार अवस्थान हो जाने से सर्वजघन्य शरीर हो जाता है। (मू.चा.भा.२ गा.१०९०)

प्र.752 बादर और सूक्ष्म जीव किन्हें कहते हैं?

उत्तर बादर नाम कर्मोदय से जो बाधाकर और बाधित शरीर वाले होते हैं वे बादर जीव कहलाते हैं। सूक्ष्म नाम कर्मोदय से जो न बाधिक होते हैं और न बाधा देते हैं ऐसे जीव सूक्ष्म कहलाते हैं।

प्र.753 पृथ्वी कायिक जीवों का आकार किस तरह का होता है?

उत्तर पृथ्वी कायिक जीवों का आकार मसूरिका सदृश गोल होता है।

प्र.754 जलकायिक जीवों का आकार किसके सदृश होता है?

उत्तर जलकायिक जीवों का आकार कुश के अग्रभाग पर पड़ी हुई गोल-गोल बिन्दु के समान होता है।

प्र.755 अग्निकायिक जीवों का आकार किसके समान होता है?

उत्तर अग्निकायिक जीवों का आकार सुइयों के समूह के आकार जैसा होता है।

प्र.756 वायुकायिक जीवों का आकार कैसा होता है?

उत्तर वायुकायिक जीवों का आकार पताका जैसा होता है।

प्र.757 प्रत्येक एवं साधारण बादर-सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवों का तथा विकलेन्द्रिय जीवों का आकार किस तरह का होता है?

उत्तर उपर्युक्त जीवों का आकार अनेक तरह का होता है अर्थात् ये सब हुण्डक संस्थान रूप होते हैं।

प्र.758 पंचेन्द्रिय जीवों के शरीर का आकार किस तरह का होता है?

उत्तर पंचेन्द्रिय तिर्यंच व मनुष्यों के शरीर का आकार छह संस्थान रूप होता है। (छह संस्थान वर्णन देखिये जैनागम संस्कार अ.17, पृ.167)

प्र.759 श्रोत्रेन्द्रिय का आकार किस तरह का होता है?

उत्तर श्रोत्रेन्द्रिय का आकार जौ की नाली सदृश होता है।

प्र.760 चक्षु इन्द्रिय का आकार कैसा होता है?

उत्तर चक्षु इन्द्रिय का आकार मसूरिका जैसा होता है।

प्र.761 घ्राणेन्द्रिय का आकार किसके समान होता है?

उत्तर घ्राणेन्द्रिय का आकार अतिमुक्तक-तिल के पुष्प के समान होता है।

प्र.762 जिह्वा इन्द्रिय का आकार किस तरह का होता है?

उत्तर जिह्वा इन्द्रिय का आकार अर्धचन्द्र के समान या खुरपे के समान होता है।

प्र.763 स्पर्शन इन्द्रिय का आकार किसके समान होता है?

उत्तर स्पर्शन इन्द्रिय के अनेकों आकार होते हैं, जो समचतुरस्र आदि भेद से व्यक्त होते हैं। (समचतुरस्र आदि छह संस्थान देखिये जैनागम संस्कार अ.17, पृ.167)

प्र.764 मनुष्य और पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में कौन-से संस्थान पाये जाते हैं?

उत्तर मनुष्य और पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में छहों संस्थान पाये जाते हैं।

प्र.765 देवों में कौन-सा संस्थान पाया जाता है?

उत्तर देवों में मात्र समचतुरस्र संस्थान ही पाया जाता है।

प्र.766 नारकियों में कौन-सा संस्थान होता है?

उत्तर नारकियों में मात्र हुण्डक संस्थान ही पाया जाता है।

प्र.767 पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवों की उत्कृष्ट शक्ति युक्त स्पर्शन इन्द्रिय की विषय-ग्रहण शक्ति कितनी होती है?

उत्तर पृथ्वी कायिकादिक पांचों स्थावर अपनी-अपनी उत्कृष्ट शक्ति युक्त स्पर्शन इन्द्रिय द्वारा चार सौ धनुष पर्यन्त मार्ग में स्थित स्पर्श को ग्रहण कर लेते हैं।

प्र.768 द्वीन्द्रिय जीव की अपनी इन्द्रियों द्वारा विषय-ग्रहण शक्ति कितनी होती है?

उत्तर द्वीन्द्रिय जीव रसना इन्द्रिय द्वारा चौंसठ धनुष तक स्थित रस को ग्रहण कर लेते हैं। वे ही द्वीन्द्रिय जीव स्पर्शन इन्द्रिय द्वारा आठ सौ धनुष पर्यन्त मार्ग में स्थित स्पर्श को ग्रहण कर लेते हैं।

प्र.769 त्रीन्द्रिय जीव की अपनी इन्द्रियों द्वारा विषय-ग्रहण शक्ति कितनी होती है?

उत्तर त्रीन्द्रिय जीव घ्राणेन्द्रिय द्वारा सौ धनुष पर्यन्त स्थित गन्ध को ग्रहण कर लेते हैं। ये ही तीन इन्द्रिय जीव स्पर्शन इन्द्रिय द्वारा सोलह सौ धनुष पर्यन्त मार्ग में अवस्थित स्पर्श को ग्रहण कर सकते हैं और रसना

इन्द्रिय द्वारा एक सौ अट्ठाईस धनुष पर्यन्त मार्ग में स्थित रस को ग्रहण कर लेते हैं।

प्र.770 चतुरिन्द्रिय जीव की अपनी इन्द्रियों द्वारा विषय-ग्रहण शक्ति कितनी होती है?

उत्तर चतुरिन्द्रिय जीव के चक्षु इन्द्रिय का विषय-ग्रहण उनतीस सौ चौवन योजन कहा है। ये ही जीव स्पर्श द्वारा तीन हजार दो सौ धनुष पर्यन्त स्थित स्पर्श को विषय कर लेते हैं, ये ही जीव रसना द्वारा दो सौ छप्पन धनुष पर्यन्त स्थित रस को ग्रहण कर लेते हैं और घ्राणेन्द्रिय द्वारा दो सौ धनुष तक स्थित गन्ध को अपना विषय बना लेते हैं।

प्र.771 असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव की अपनी इन्द्रियों द्वारा विषय-ग्रहण शक्ति कितनी है?

उत्तर असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव के श्रोत इन्द्रिय का विषय आठ हजार धनुष है। ये ही जीव स्पर्श द्वारा छह हजार चार सौ धनुष प्रमाण पर्यन्त मार्ग में स्थित स्पर्श को ग्रहण कर सकते हैं, रसना इन्द्रिय द्वारा ये पाँच सौ बारह धनुष पर्यन्त रस को ग्रहण कर सकते हैं, घ्राणेन्द्रिय द्वारा चार सौ धनुष पर्यन्त स्थित गन्ध को ग्रहण कर लेते हैं तथा चक्षु इन्द्रिय द्वारा उनसठ सौ आठ योजन प्रमाण मार्ग में स्थित रूप को ग्रहण कर लेते हैं।

प्र.772 संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव की अपनी पंचेन्द्रियों द्वारा विषय ग्रहण शक्ति कितनी है?

उत्तर संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव के श्रोत्र इन्द्रिय का विषय बारह योजन प्रमाण है। अर्थात् वे बारह योजन में उत्पन्न हुए शब्दों को सुन लेते हैं। ये ही जीव अपनी स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय के द्वारा नव-नव योजन तक स्थित स्पर्श, रस और गन्ध द्रव्यों को ग्रहण कर लेते हैं। तथा चक्षु इन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय सैंतालीस हजार दो सौ त्रेसठ योजन, एक कोश बारह सौ पन्द्रह धनुष, एक हाथ दो अंगुल और कुछ अधिक जौ का चतुर्थ भाग प्रमाण है।

प्र.773 चक्षु इन्द्रिय के उत्कृष्ट विषय क्षेत्र को कौन कहाँ से कब अपना विषय बना सकता है?

उत्तर भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड स्थित अयोध्या नगरी के बीच में बने हुए अपने महल के ऊपरी भाग से भरत आदि चक्रवर्ती संक्रान्ति के दिन उदय होते हुए सूर्य के भीतर के जिनबिम्ब का दर्शन करते हैं। तात्पर्य यह है कि चक्रवर्ती अधिक-से-अधिक इतनी दूरी तक के पदार्थ को चक्षु द्वारा जान लेते हैं। (विशेष वर्णन देखें-मू.चा.भाग २, पृष्ठ 246) (इन्द्रियधारी मनुष्य और तिर्यंचों की आयु प्रकरण देखिये-जैनागम संस्कार अध्याय 13 पृ.121, पृ.133)

प्र.774 संसारी जीवों की आहार, शरीर आदि पर्याप्तियों की पूर्णता एक समान काल में होती है या कोई विशेषता है?

उत्तर तिर्यंच जीवों की पर्याप्तियाँ अन्तर्मुहूर्त्त या उत्कृष्ट रूप से एक समय कम दो घड़ी काल रूप अन्तर्मुहूर्त्तकाल में और मनुष्यों की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त में पर्याप्तियाँ पूर्ण हो जाती हैं। तथा उपपाद से जन्म लेने वाले देव और नारकियों के शरीर अवयवों की रचना रूप पर्याप्तियों की पूर्णता प्रति समय होती है। (मू.चा.भा.2)

प्र.775 देव नारकियों के पर्याप्तियों की पूर्णता प्रतिसमय और शेष जीवों की अन्तर्मुहूर्त्त में होती है, ऐसा

क्यों?

उत्तर क्योंकि जिस काल में देव-नारकियों के आहार आदि पर्याप्ति रूप कारणों की पूर्णता होती है उसी काल में उनके शरीर के सर्व अवयव रूप कार्यों की रचना पूर्ण हो जाती है। पुन: तिर्यञ्च और मनुष्यों के लघु काल के द्वारा आहार आदि कारणों की पूर्णता रूप पर्याप्तियाँ पूर्ण हो जाती हैं किन्तु शरीर आदि कार्यों की पूर्णता बहुत काल में हो पाती है। अत: उपपाद जन्म वालों के प्रति पर्याप्तियों का काल प्रतिसमय और अन्य के प्रति अन्तर्मुहूर्त्त सार्थक है।

प्र.776 देव-गण उपपाद शय्याओं पर अन्तर्मुहूर्त्त में ही दिव्य शरीर से किस तरह परिपूर्ण हो जाते हैं?

उत्तर भवनवासी देव आदि से लेकर सर्वार्थसिद्धि पर्यन्त देव-स्थानों व विमानों में जो उपपाद शिलाएँ हैं उनका आकार बन्द हुई सीप के सदृश है। उन शिलाओं पर सभी अलंकारों से विभूषित, मणियों से खचित, श्रेष्ठ पर्यंक रूप शय्याएँ हैं। उन शय्याओं में वे देव शोभन शरीर आदि आकार और वर्ण से प्रतिसमय में पर्याप्त होकर सर्वाभरण से विभूषित और सम्पूर्ण यौवन वाले हो जाते हैं। जिस विमान की उपपाद शिला की महाशय्या पर वे देव उत्पन्न होते हैं उस शय्या पर समय-समय में दिव्य रूप से परिपूर्ण हो जाते हैं। अर्थात् एक अन्तर्मुहूर्त्त में ही वे देव दिव्य आहार आदि वर्गणाओं को ग्रहण करते हुए दिव्य रूप और यौवन से परिपूर्ण हो जाते हैं।

प्र.777 अन्तर्मुहूर्त्त में रचित होने वाला देवों का शरीर और कौन-कौन-सी विशेषताओं को धारण करने वाला होता है?

उत्तर ऐसा दिव्य शरीर हाथ-पैर, मस्तक, कण्ठ आदि को विभूषित करने वाले भूषण अर्थात् शरीर के सभी अवयव, उनके अलंकार और नाना गुण भी पूर्ण हो जाते हैं तथा वह शरीर नव यौवन से सम्पन्न हो जाता है। जो कि परम रमणीय, सर्वालंकार से समन्वित, अतिशय सुन्दर और सर्वजनों को आह्लादित करने वाला होता है। सर्व देव अवधिज्ञान से भी सम्पन्न होते हैं।

प्र.778 देवों का शरीर कौन-कौन-सी अवस्थाओं से रहित और गुणों से सहित होता है?

उत्तर देवों का शरीर बाल्य वृद्धावस्था से रहित, मलमूत्र व पसीना से रहित, स्वर्णसम कान्तिमान, समचतुरस्र संस्थान युक्त, धातु-उपधातु से रहित निर्मल, सर्वजन मनोहारी रूप सौन्दर्य से युक्त और जिनका नि:श्वास सभी की घ्राणेन्द्रिय को आह्लादित करने वाला सुगन्धित हो इस तरह का होता है।

प्र.779 क्या देवों (व देवियों) के शरीर में सप्त धातुए नहीं पायी जाती हैं?

उत्तर हाँ! देवों के सिर, भोंह, नेत्र, नाक, कान, काँख और गुह्य प्रदेश आदि स्थानों में बाल नहीं होते हैं। हाथ और पैर की अँगुलियों के अग्रभाग में नख नहीं होते हैं। श्मश्रु-मूंछ-दाढ़ी के बाल नहीं होते हैं एवं सम्पूर्ण शरीर में उत्पन्न होने वाले सूक्ष्म बाल अर्थात् रोम भी नहीं होते हैं। उनके दिव्य शरीर में चर्म-मांसादि को प्रच्छादित करने वाला, वसा-मांस और हड्डियों में होने वाला चिकना रस, रुधिर-खून, मूत्र, विष्ठा तथा वीर्य, पसीना आदि कुछ भी नहीं होते हैं तथा हड्डी और शिरा समूह भी नहीं होते हैं। अर्थात् देवों के शरीर में सात प्रकार की धातुएँ और उपधातुएँ कुछ भी नहीं होती अत: उनका दिव्य

रूप होता है। (मू.चा.गा.1054)

प्र.780 पुनः देवों का दिव्य शरीर किस तरह से निर्मित होता है?

उत्तर उत्तम वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से युक्त अनन्त दिव्य परमाणुओं, जो कि सर्व गुणों से विशिष्ट वैक्रियिक शरीर के योग्य हैं ऐसे पुद्गल परमाणुओं से जिनके शरीर के सभी अवयव बनते हैं वे देव अपने द्वारा संचित शुभकर्म के माहात्म्य से ऐसे दिव्य वैक्रियिक शरीर को ग्रहण करते हैं।

प्र.781 देवों के वैक्रियिक शरीर की गुणाधिक रूप अन्य तरह की विशेषता क्या है?

उत्तर विविध प्रकार की क्रिया अर्थात् अणिमा, महिमा आदि विक्रिया करना जिसका प्रयोजन है उसे वैक्रियिक शरीर कहते हैं। देवों का शरीर मनुष्य जाति नामक कर्मोदय से सहित मनुष्य जीवों के आकार के सदृश रहता है। यह प्रशस्त नामक कर्मोदय से निर्मित होने से शुभनाम युक्त होता है, मृदु-मन्थर-विलास आदि से संयुक्त प्रशस्त गतिवाला है, शोभन स्वर से युक्त है एवं शोभन रूप से मनोहर भी रहता है। गति, नृत्य आदि के साथ देवों के शरीर में मनुष्यों के समान केश, नख आदि के आकार सभी विद्यमान रहते हैं जैसे कि सुवर्ण व पाषाण की प्रतिमा में सर्व आकार बनाये जाने पर वह अतिशय सुन्दर दिखती है उसी प्रकार से इनके शरीर में भी अतिशय सुन्दरता पायी जाती है। (मू.चा.गा. 1056)

प्र.782 देवों का शरीर अतिशय सुन्दर होते हुए भी किस अपेक्षा से मनुष्यों से उत्कृष्टता को प्राप्त नहीं होता?

उत्तर क्योंकि देव पर्याय में देवों का शरीर संयम का आधार नहीं है। इन्द्रिय सुख कारक-पुण्य कर्म की विचित्रता उन्हें जीवन पर्यन्त भोगों में ही तत्पर बनाये रखती है। जबकि मनुष्य का शरीर संयम का आधार और त्याग-तपस्या व परिषह और उपसर्गों में सहनशीलता के योग्य होता है। विशिष्ट पुण्यशाली मनुष्य चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से व्रत-नियम-संयम को जिस शरीर के माध्यम से धारण कर पाते हैं ऐसा शरीर आत्मा का उपकारक होने से अपनी उदारता के कारण औदारिक कहा जाता है तब देव शरीर से भी श्रेष्ठ प्रशंसनीय व उत्कृष्टता को प्राप्त होता है। अतः कहा भी है कि नरकाया को सुरपति तरसे सो दुर्लभ प्राणी। इस अपेक्षा से मनुष्यों का शरीर देवों से भी महत्त्वपूर्ण है। (देवों के प्रकार आदि देखिये- जैनागम संस्कार अ. 13, प्र.70)

116 / 196

प्र.783 भवनवासी और व्यन्तर देवों के निवास स्थलों के नाम व लक्षण क्या हैं?

उत्तर उपर्युक्त देवों के निवास स्थलों के नाम भवन, भवनपुर और आवास हैं। जो निवास स्थान पृथ्वी के नीचे अर्थात् रत्नप्रभा पृथ्वी के खरभाग और पंक भाग में हैं उन्हें भवन कहते हैं, जो निवास स्थान मध्यलोक की समभूमि पर हैं एवं द्वीप-समुद्रों के ऊपर हैं, उन्हें भवनपुर कहते हैं तथा जो स्थान पृथ्वी से ऊँचे हैं और द्रह (तालाब) एवं पर्वतादिकों के ऊपर हैं, उन्हें आवास कहते हैं।

प्र.784 देवगति के देव अत्यन्त शक्तिवान होते हैं और उन्हें भय की आशंका नहीं होती अतः उनके आवान्तर भेदों में आत्मरक्ष की व्यवस्था क्यों है?

उत्तर यद्यपि इन्द्र आदि देवों को किसी प्रकार का भय नहीं है, फिर भी उनकी विभूति का द्योतन करने के

लिए तथा प्रीति की प्रकर्षता का कारण होने से दूसरों पर प्रभाव प्रदर्शित करने के लिए आत्मरक्ष कल्पित किये जाते हैं जिसे लखकर इन्द्र आदिक को परम प्रीति उत्पन्न होती है।

प्र.785 भवनवासी देवों के दस भेदों में दो-दो इन्द्र किस-किस नाम के धारक होते हैं?

उत्तर असुरकुमार नामक भवनवासी देवों में चमर और वैरोचन, नागकुमार देवों में भूतानन्द और धरणानन्द, विद्युत्कुमारों के घोष और महाघोष, सुपर्णकुमारों के वेणुदेव और वेणुधारी, अग्निकुमारों के अग्निशिखी और अग्निवाहन, वातकुमारों के वेलम्ब और प्रभञ्जन, स्तनितकुमारों के हरिषेण और हरिकान्त, उदधिकुमारों के जलप्रभ और जलकान्त, द्वीपकुमारों के पूर्ण और वशिष्ठ तथा दिक्कुमारों के अमितगति और अमितवाहन इस तरह सुन्दर नामवाले कुल बीस इन्द्र होते हैं।

प्र.786 भवनवासियों में असुरकुमार आदि देवों के मुकुटों में कौन-से चिह्न होते हैं?

उत्तर क्रमशः चूड़ामणि, सर्प, गरुड़, हाथी, मगर, वर्धमान (स्वस्तिक), वज्र, सिंह, कलश और अश्व ऐसे प्रसिद्ध चिह्न होते हैं।

प्र.787 भवनवासी देवों के निवास स्थान कहाँ पर किस तरह स्थित हैं?

उत्तर रत्नप्रभा पृथ्वी के पंकबहुल भाग में इस जम्बूद्वीप से तिरछे दक्षिण एवं उत्तर दिशा में असंख्यात द्वीप समुद्रों के बाद क्रमशः दक्षिणेन्द्र, उत्तरेन्द्र एवं उनके परिवार वाले असुरकुमारों के भवन हैं। रत्नप्रभा पृथ्वी के खर भाग में ऊपर और नीचे एक-एक हजार योजन छोड़कर इस जम्बूद्वीप से तिरछे दक्षिण एवं उत्तर दिशा में असंख्यात द्वीप-समुद्रों के बाद क्रमशः दक्षिणेन्द्र, उत्तरेन्द्र एवं उनके परिवार वाले शेष नौ कुमारों के भवन हैं। इनमें किन्हीं-किन्हीं के भवनपुर एवं आवास भी होते हैं, परन्तु असुरकुमार देवों के केवल भवन रूप ही निवास स्थान होते हैं, भवनपुर और आवास नहीं होते हैं।

प्र.788 इन देव भवनों की लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई के साथ-साथ क्या विशेषता हैं?

उत्तर इन भवनों की लम्बाई, चौड़ाई का जघन्य प्रमाण संख्यात योजन और उत्कृष्ट प्रमाण असंख्यात योजन है। वे समस्त भवन चौकोर होते हैं। उनका बाहुल्य (ऊँचाई) तीन सौ योजन है। प्रत्येक भवन के बीच में सौ योजन ऊँचा एक पर्वत है और प्रत्येक पर्वत पर एक-एक चैत्यालय है। भवनों की भूमि और दीवारें रत्नमयी होती हैं। वे भवन सतत प्रकाशवान रहते हैं और सर्वेन्द्रियों को सुख देने वाली चन्दनादि वस्तुओं से सिक्त होते हैं।

प्र.789 दस प्रकार के भवनवासी देवों के भवनों की संख्या कितनी-कितनी है?

उत्तर असुरकुमार देवों के 64 लाख भवन हैं। नागकुमार देवों के 84 लाख भवन हैं। सुपर्णकुमार देवों के 72 लाख भवन हैं। द्वीप कुमारों के 76 लाख भवन हैं। उदधिकुमारों के 76 लाख भवन हैं। स्तनित कुमारों के 76 लाख भवन हैं। विद्युत कुमारों के 76 लाख भवन हैं। दिक्कुमारों के 76 लाख भवन हैं। अग्निकुमारों के 76 लाख भवन हैं तथा वायुकुमारों के 96 लाख भवन हैं।

प्र.790 भवनवासी इन्द्रों के भवनों की संख्या कितनी-कितनी है?

उत्तर भवनवासी के दक्षिणेन्द्रों में चमरेन्द्र के 34 लाख, भूतानन्द के 44 लाख, वेणु के 38 लाख, पूर्ण के 40

लाख, जलप्रभ के 40 लाख, घोष के 40 लाख, हरिषेण के 40 लाख, अमितगति के 40 लाख, अग्निशिखी के 40 लाख, और वेलम्ब के 50 लाख भवन हैं। इसी प्रकार उत्तरेन्द्र में वैरोचन के 30 लाख, धरणानन्द के 40 लाख, वेणुधारी के 34 लाख, वाशिष्ठ के 36 लाख, जलकान्त के 36 लाख, महाघोष के 36 लाख, हरिकान्त के 36 लाख, अमित वाहन के 36 लाख, अग्निवाहन के 36 लाख और प्रभंजन के 46 लाख भवन हैं। (इन्द्रों की इस भवन संख्या में उनके परिवार वाले देवों के भवनों की संख्या भी सम्मिलित है) (क.दी.भा.-3)

प्र.791 असुरकुमार आदि देवों के चैत्यवृक्षों के नाम किस प्रकार हैं ?

उत्तर असुरकुमार आदि देवों के चैत्यवृक्षों के नाम क्रमशः पीपल, सप्तपर्ण, शाल्मली, जामुन, वेतस, कदम्ब, प्रियंगु, शिरीष, पलाश और राजद्रुम (चारोली-चिरोंजी का वृक्ष) हैं।

प्र.792 उपर्युक्त वृक्षों के लिए चैत्यवृक्ष क्यों कहा जाता है?

उत्तर चैत्यवृक्षों के मूल भाग की चारों दिशाओं में पद्मासन से स्थित पांच-पांच जिन प्रतिमाएँ हैं अतः इन्हें चैत्यवृक्ष कहते हैं। प्रतिमाओं के आगे प्रत्येक दिशा में रत्नमय, उत्तुंग पाँच-पाँच मानस्तम्भ हैं। इन मानस्तम्भों के ऊपर चारों दिशाओं में सात-सात प्रतिमाएँ विराजमान हैं। जिनकी सम्यग्दृष्टि देवगण बड़ी श्रद्धा से पूजन भक्ति किया करते हैं तथा मिथ्यादृष्टि देव कुलदेवता मानकर उपासना करते हैं।

प्र.793 भवनवासी देवों के भवनलोक में अकृत्रिम- चैत्यालयों की संख्या कितनी है?

उत्तर भवनवासी देवों के भवनलोक में सात करोड़ बहत्तर लाख अकृत्रिम चैत्यालय हैं। जिनमें देव-देवाङ्गनाएँ भक्ति-भाव पूर्वक नृत्य, संगीत एवं मधुर गान आदि सह जिनपूजन किया करते हैं। (भवनों की जितनी संख्या है, अकृत्रिम चैत्यालयों की उतनी ही संख्या है।)

प्र.794 भवनवासी देवों में आहार और श्वासोच्छ्वास का क्या नियम है?

उत्तर असुरकुमार देव 1000 वर्ष में आहार ग्रहण करते हैं और एक पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं। नागकुमार सुपर्णकुमार और द्वीपकुमार $12\frac{1}{2}$ दिन में आहार ग्रहण करते हैं तथा $12\frac{1}{2}$ मुहूर्त्त में श्वासोच्छ्वास लेते हैं उदधिकुमार, स्तनितकुमार और विद्युतकुमार 12 दिन में आहार ग्रहण करते हैं एवं 12 मुहूर्त्त में श्वासोच्छ्वास लेते हैं। तथा दिक्कुमार, अग्निकुमार और वायुकुमार देव $7\frac{1}{2}$ दिन में आहार ग्रहण करते हैं और $7\frac{1}{2}$ मुहूर्त्त में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

प्र.795 देवों का आहार किस तरह से और किस तरह का ग्रहण किया जाता है?

उत्तर देवों को अपने समय से आहार ग्रहण की इच्छा होते ही उनके कण्ठ से अति स्निग्ध और अनुपम अमृतमय आहार निर्झरित हो जाता है।

प्र.796 भवनवासी देवों का गमन किस निमित्त कहाँ-कहाँ तक होता है?

उत्तर भक्ति सह इन्द्र आदि देवगण तीर्थंकरों के पञ्चकल्याणकों के निमित्त ढाई द्वीप में तथा जिनेन्द्र प्रतिमाओं की पूजन के निमित्त नंदीश्वर द्वीप पर्यन्त जाते हैं। शीलादि गुणों के धारी मनुष्य या मुनिवरों

की सेवा पूजन व परीक्षा हेतु भी जाते हैं।

प्र.797 असुरकुमार देव और कहाँ तक गमन करते हैं?

उत्तर असुरकुमार देव क्रीड़ा या सहायता या शत्रुता निभाने के लिए ऊर्ध्वरूप से अन्य की सहायता बिना ऐशान स्वर्ग तक और दूसरे देवों की सहायता से अच्युत स्वर्ग पर्यन्त गमन करते हैं तथा अधोलोक में तीसरी पृथ्वी तक जाते हैं।

प्र.798 भवनवासी देवों के उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर भवनवासी देवों के दक्षिणेन्द्रों में चमर, भूतानन्द, वेणु, पूर्ण और जलप्रभ आदि छह देवों की उत्कृष्ट आयु क्रमशः 1 सागर, 3 पल्य, $2\frac{1}{2}$ पल्य, 2 पल्य एवं $1\frac{1}{2}$ पल्य होती है।

उत्तरेन्द्रों में वैरोचन, धरणानन्द, वेणुधारी, वशिष्ठ एवं जलकान्त आदि छह देवों की उत्कृष्ट आयु क्रमशः साधिक 1 सागर, साधिक 3 पल्य, साधिक $2\frac{1}{2}$ पल्य, साधिक 2 पल्य एवं साधिक $1\frac{1}{2}$ पल्य होती है।

प्र.799 भवनवासी देवों की जघन्यायु कितनी होती है?

उत्तर भवनवासी देवों की जघन्यायु दस हजार वर्ष की होती है।

प्र.800 आयु की अपेक्षा भवनवासी देवों में कितनी शक्ति (सामर्थ्य) होती है?

उत्तर जो देव दस हजार वर्ष की आयु वाला होता है, वह अपनी शक्ति से एक सौ मनुष्यों का हनन करने में समर्थ होता है, तथा वह देव डेढ़ सौ धनुष प्रमाण लम्बे, चौड़े और मोटे क्षेत्र को बाहुओं से वेष्टित करने और उखाड़ने में समर्थ होता है।

एक पल्योपम आयु वाला देव पृथ्वी के छह खण्डों को उखाड़ने तथा वहाँ रहने वाले मनुष्यों एवं तिर्यञ्चों का हनन करने में समर्थ होता है

एक सागरोपम काल की आयु वाला देव समग्र जम्बूद्वीप को उखाड़कर फेंक देने व तहस-नहस करने और उसमें रहने वाले नर पशुओं का हनन करने में समर्थ होता है।

प्र.801 देव एक समय में कितनी दूरी तय कर सकता है?

उत्तर संख्यात वर्ष की आयु वाला देव एक समय में संख्यात योजन की दूरी तय कर (जा, आ) सकता है।

प्र.802 भवनवासी देवों के अवधिज्ञान की प्रवृत्ति ऊर्ध्व, अधः दिशा रूप कितने क्षेत्र में है?

उत्तर भवनवासी देव स्व-स्व भवन में स्थित होकर अपने अवधिज्ञान से ऊर्ध्व दिशा में मेरु पर्वत के शिखर पर्यन्त क्षेत्र के पदार्थों को जान सकते हैं। अधो दिशा में अपने-अपने भवनों के नीचे-नीचे अल्प क्षेत्र पर्यन्त के पदार्थों को जान सकते हैं।

प्र.803 भवनवासी देवों के अवधिज्ञान का विषय क्षेत्र तिर्यक् रूप से एवं काल की अपेक्षा किस प्रकार है?

उत्तर भवनवासी देवों का अवधिज्ञान अबाधित रूप से तिर्यक् (तिरछे) क्षेत्र में जघन्य रूप से पच्चीस योजन तक विषय करता है। काल की अपेक्षा एक दिन के भीतर की वस्तु को विषय करता है। उत्कृष्ट रूप से

क्षेत्र एवं काल की अपेक्षा असुरकुमार देवों के अवधिज्ञान का प्रमाण क्रमशः असंख्यात करोड़ योजन एवं असंख्यात वर्ष मात्र है। शेष देवों के अवधिज्ञान का प्रमाण, क्षेत्र एवं काल की अपेक्षा क्रमशः उत्कृष्ट रूप से असंख्यात हजार योजन व असंख्यात वर्ष और असुरकुमारों के अवधिज्ञान के काल से संख्यात गुणा कम है।

प्र.804 भवनवासी देवों के शरीर का उत्सेध (ऊँचाई) कितना होता है एवं विक्रिया कितनी होती है?

उत्तर असुरकुमारों के शरीर की ऊँचाई 25 धनुष और शेष देवों की ऊँचाई दस धनुष मात्र होती है। दस प्रकार के भवनवासी देव अनेक रूपों की विक्रिया करते हुए अपने-अपने अवधिज्ञान के क्षेत्र को पूरित करते हैं। विक्रिया द्वारा निर्मित उनके शरीरों की ऊँचाई अनेक प्रकार की होती है।

प्र.805 असुरकुमार देवों का शरीर किस वर्ण का होता है?

उत्तर असुरकुमार देवों का शरीर कृष्णवर्ण का होता है।

प्र.806 नागकुमार देवों का शरीर किस वर्ण का होता है?

उत्तर नागकुमार देवों का शरीर कालश्यामल सदृश वर्ण का होता है।

प्र.807 सुपर्णकुमार और द्वीपकुमार देवों के शरीर का वर्ण किस तरह का होता है?

उत्तर सुपर्णकुमार और द्वीपकुमार देवों के शरीर का वर्ण श्यामल वर्ण का होता है।

प्र.808 उदधिकुमार और स्तनितकुमार देवों के शरीर का वर्ण कैसा होता है?

उत्तर उदधिकुमार और स्तनितकुमार देवों का शरीर कालश्यामल वर्ण का होता है।

प्र.809 विद्युत्कुमार देवों का शरीर किस वर्ण का होता है?

उत्तर विद्युत्कुमार देवों का शरीर बिजली के सदृश वर्ण का होता है।

प्र.810 दिक्कुमार देवों का शरीर किस वर्ण का होता है?

उत्तर दिक्कुमार देवों का शरीर श्यामल वर्ण का होता है।

प्र.811 अग्निकुमार देवों का शरीर किस वर्ण का होता है?

उत्तर अग्निकुमार देवों का शरीर प्रज्वलित अग्नि सदृश वर्ण का होता है।

प्र.812 वातकुमार देवों का शरीर किस वर्ण का होता है?

उत्तर वातकुमार देवों का शरीर नवीन कुवलय (नीलकमल) के सदृश वर्ण का होता है।

प्र.813 असुरकुमारादि देवों के प्रवीचार सम्बन्धी क्या नियम है?

उत्तर असुरकुमार आदि देवों का प्रवीचार (कामवासना) सामान्य मनुष्य की तरह काया प्रवीचार रूप होता है।

प्र.814 निम्न निकाय के देवों की गति को देव-दुर्गति क्यों कहा जाता है?

उत्तर निम्न निकाय के देव अत्यधिक भोग लालसा के साथ मिथ्यात्व सेवन तथा पारस्परिक ईर्ष्या की भावना के कारण इनकी गति देव-दुर्गति कहा जाती है।

प्र.815 भवनवासी देवों में उत्पत्ति के क्या कारण हैं?

उत्तर मिथ्यात्व सेवन सह पापानुबंधी पुण्य करने वाले, ज्ञान और चारित्र में दृढ़ शंका वाले, संक्लेश परिणामों वाले, दोषपूर्ण चारित्रवाले, उन्मार्गगामी, निदान भावों से युक्त, पापों की प्रमुखता से सहित, कामिनी के विरह रूपी ज्वर से जर्जरित, कलहप्रिय और पापिष्ठ एवं अविनयी संज्ञी व असंज्ञी जीव भवनवासी देवों में उत्पन्न होते हैं। जो क्रोध, मान, माया और लोभ कषायों में आसक्त हैं, दुश्चारित्र वाले हैं तथा वैर-भाव में रुचि रखते हैं, वे असुरों में उत्पन्न होते हैं। (क.प्र.भा.3)

प्र.816 देव-दुर्गतियों में उत्पत्ति के क्या कारण है?

उत्तर समाधिमरण के विराधित करने पर कितने ही जीव कन्दर्प, किल्विष, आभियोग्य और सम्मोह आदि देव-दुर्गतियों में उत्पन्न होते हैं। जो सत्यवचन से रहित है, बहुजन में हँसी करते हैं और जिनका हृदय कामासक्त रहता है, वे निश्चय से कन्दर्प देवों में उत्पन्न होते हैं।

जो भूतिकर्म, मन्त्राभियोग्य और कौतूहलादि से संयुक्त हैं तथा लोगों की वंचना करने में प्रवृत्त रहते हैं, वे वाहन देवों में उत्पन्न होते हैं।

तीर्थंकर, संघ-प्रतिमा एवं आगम-ग्रन्थादिक के विषय में प्रतिकूल, दुर्विनयी तथा प्रलाप करने वाले जीव किल्विषिक देवों में उत्पन्न होते हैं।

कुमार्ग का उपदेश करने वाले, जिनेन्द्रोपदिष्ट मार्ग के विरोधी और मोह से मुग्ध जीव सम्मोह जाति के देवों में उत्पन्न होते हैं।

प्र.817 व्यन्तर देवों के आठ भेदों में प्रत्येक के दो-दो इन्द्रों के नाम कौन- से हैं?

उत्तर व्यन्तर देवों में किन्नरों के किंपुरुष और किन्नर, किंपुरुषों के सत्पुरुष और महापुरुष, महोरगों के महाकाय और अतिकाय, गन्धर्वों के गीतरति और गीतयश, यक्षों के मणिभद्र और पूर्णभद्र, राक्षसों के भीम और महाभीम, भूतों के स्वरूप और प्रतिरूप, पिशाचों के काल और महाकाल इस तरह कुल सोलह इन्द्र होते हैं।

121 / 196

प्र.818 व्यन्तर देवों के निवास स्थान कहाँ पर हुआ करते हैं?

उत्तर रत्नप्रभा पृथ्वी के खरभाग में जम्बूद्वीप से तिरछे दक्षिण एवं उत्तर दिशा में असंख्यात द्वीप-समुद्रों के बाद क्रमशः दक्षिणेन्द्र, उत्तरेन्द्र एवं उनके परिवार वाले किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, भूत और पिशाच इन सात प्रकार के व्यन्तर देवों के आवास हैं।

रत्नप्रभा पृथ्वी के पंकबहुल भाग में जम्बूद्वीप से तिरछे दक्षिण एवं उत्तर दिशा में असंख्यात द्वीप-समुद्रों के बाद क्रमशः दक्षिणेन्द्र, उत्तरेन्द्र एवं उनके परिवार वाले राक्षस नाम व्यन्तरों के आवास हैं। चित्रा और वज्रा पृथ्वी की सन्धि से प्रारम्भ कर मेरु पर्वत की ऊँचाई तक तथा मध्यलोक का विस्तार जहाँ तक है वहाँ के समस्त क्षेत्र में व्यन्तर देव यथायोग्य भवनपुरों, आवासों एवं भवनों में रहते हैं।

प्र.819 नीचोपपाद आदि व्यन्तर देवों का निवास कहाँ पर है?

उत्तर चित्राभूमि (पृथ्वी) से एक हाथ ऊपर नीचोपपाद देव स्थित हैं। इनसे दस हजार हाथ ऊपर दिग्वासी देव हैं। इनसे दस हजार हाथ ऊपर अन्तरवासी और उनसे दस हजार हाथ ऊपर कूष्माण्ड देव निवास

करते हैं। इनसे बीस हजार हाथ ऊपर उत्पन्न देव, इनसे बीस हजार हाथ ऊपर अनुत्पन्न देव, इनसे बीस हजार हाथ ऊपर प्रमाणक देव, इनसे बीस हजार हाथ ऊपर गन्धदेव, इनसे बीस हजार हाथ ऊपर महागन्धदेव, इनसे बीस हजार हाथ ऊपर भुजङ्गदेव, इनसे बीस हजार हाथ ऊपर प्रीतिकदेव और इनसे बीस हजार हाथ ऊपर आकाशोत्पन्न व्यन्तर देव निवास करते हैं।

प्र.820 व्यन्तर देवों के चैत्यवृक्ष कौन-से हैं? उनका स्वरूप क्या है?

उत्तर व्यन्तर देवों के क्रमशः अशोक, चम्पा, नागकेशर, तुम्बुरु, वट, कण्टकतरु, तुलसी और कदम्ब नामक चैत्यवृक्ष हैं। (ये वृक्ष चैत्यप्रतिमा युत पृथ्वी कायिक हैं।)

चैत्यवृक्षों के मूल की प्रत्येक दिशा में पल्यङ्कासन से युक्त चार-चार जिन प्रतिमाएँ हैं। प्रत्येक प्रतिमा के आगे एक-एक मानस्तम्भ है जो नाना प्रकार की मोतियों की मालाओं एवं दिव्य घण्टाजाल आदि से सुशोभित हैं।

प्र.821 व्यन्तर देव सम्बन्धी जिन-भवनों का प्रमाण कितना है?

उत्तर जगत्प्रतर के संख्यात भाग में तीन सौ योजनों के वर्ग का भाग देने पर जो लब्ध आवे उतने प्रमाण जिनमंदिर व्यन्तर लोक में हैं।

प्र.822 व्यन्तर देवों में आहार व श्वासोच्छ्वास का क्या नियम है?

उत्तर जिन व्यन्तर देवों की आयु पल्य प्रमाण है उनका पाँच दिन के अन्तर से आहार होता है और पाँच मुहूर्त्त के बाद उच्छ्वास होता है। जिन व्यन्तर देवों की आयु मात्र दस हजार वर्ष है, उनका आहार दो दिन बाद और उच्छ्वास (यहाँ के) सात श्वासोच्छ्वास (काल) के पश्चात् होता है। किन्नर आदि व्यन्तर देव तथा देवियाँ दिव्य एवं अमृतमय आहार का उपभोग मन से ही करते हैं, उनके कवलाहार (ग्रासाहार) नहीं होता है।

प्र.823 व्यन्तर देवों की विक्रिया शक्ति एवं गमन शक्ति कितनी होती है?

उत्तर दस हजार वर्ष की आयु वाला व्यन्तर देव उत्कृष्ट रूप से सौ रूपों की, जघन्य रूप सात रूपों और मध्यम रूप से विविध रूपों की विक्रिया करता है।

शेष व्यंतर देवों में से प्रत्येक देव अपने-अपने अवधिज्ञान का जितना क्षेत्र है, उतने प्रमाण क्षेत्र को विक्रिया बल से पूर्ण करता है संख्यात वर्ष प्रमाण आयु वाला व्यन्तर देव एक समय में संख्यात योजन और असंख्यात वर्ष प्रमाण आयु वाला देव असंख्यात योजन जाता है।

प्र.824 व्यन्तर देवों की आयु कितनी होती है?

उत्तर व्यन्तर देवों की उत्कृष्ट आयु एक पल्य प्रमाण, मध्यम आयु असंख्यात वर्ष प्रमाण और जघन्यायु दस हजार वर्ष प्रमाण होती है।

प्र.825 व्यन्तर देवों में सामर्थ्य (शक्ति) कितनी होती है?

उत्तर दस हजार वर्ष प्रमाण आयु वाला प्रत्येक व्यन्तर देव एक सौ मनुष्यों का हनन एवं रक्षण करने में समर्थ होता है। वह देव अपनी शक्ति से एक सौ पचास धनुष प्रमाण विस्तार एवं बाहल्य से युक्त क्षेत्र को

उखाड़ कर अन्यत्र रख सकता है। एक पल्य प्रमाण आयु वाला व्यन्तर देव अपनी भुजाओं से छह खण्डों को उलटने में समर्थ है और उनमें स्थित मनुष्यों का हनन तथा रक्षण करने में समर्थ होता है।

प्र.826 व्यन्तर देवों के अवधिज्ञान का क्षेत्र कितना है?

उत्तर दस हजार वर्ष प्रमाण आयु वाले व्यन्तर देवों के अवधिज्ञान का विषय ऊपर और नीचे जघन्य रूप से पाँच कोस तथा उत्कृष्ट रूप से पचास कोस प्रमाण है। पल्योपम प्रमाण आयु वाले व्यन्तर देव अपने अवधि ज्ञान से नीचे और ऊपर एक-एक लाख योजन प्रमाण विषय को देखते और जानते हैं।

प्र.827 व्यन्तर देवों की शारीरिक अवगाहना कितनी होती है ?

उत्तर किन्नर आदि आठों व्यन्तर देवों संबन्धी प्रत्येक की ऊँचाई दस धनुष प्रमाण होती है।

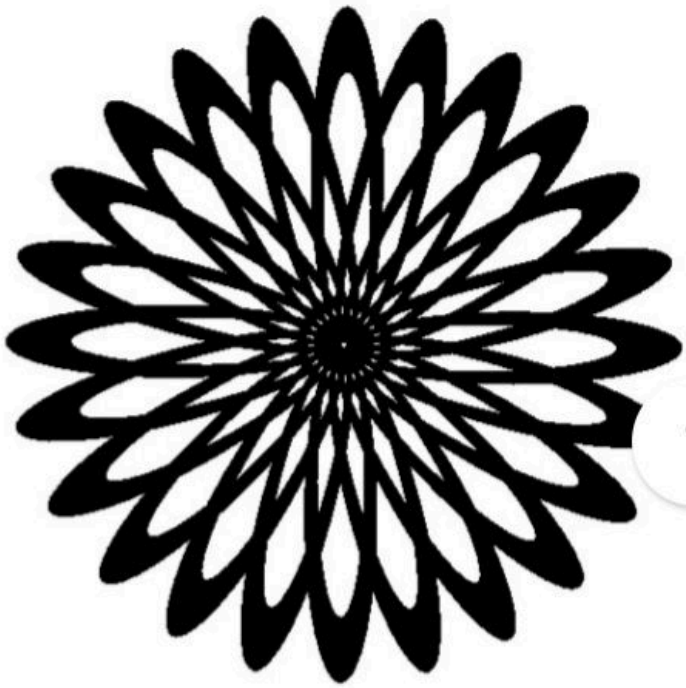

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु आठवां प्रश्न पत्र

समय : .3.. दिन | अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेन बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. वलयाकार स्वयंभूरमण समुद्र के आगे मध्यलोक में कौन-सी रचना व जीव होते हैं?
प्र. 2. सम्मूर्च्छन जीव का लक्ष्य क्या है?
प्र. 3. स्वयंभूरमण समुद्र में कौन-से एकेन्द्रिय जीव की कितनी उत्कृष्ट अवगाहना होती है?
प्र. 4. सर्व जघन्य शरीर किन जीवों का होता है?
प्र. 5. पृथक्त्व किसे कहते हैं?
प्र. 6. स्वयंभूरमण समुद्र में सबसे जघन्य अवगाहना वाला जीव कौन-सा है?
प्र. 7. बादर और सूक्ष्म जीवों का लक्षण क्या है?
प्र. 8. जिह्वा इन्द्रिय का आकार किस तरह का होता है?
प्र. 9. पृथ्वीकायिक जीवों का आकार किस तरह का होता है?
प्र.10. देवों में कौन-सा संस्थान पाया जाता है?
प्र.11. भवनवासी देवों का गमन किस निमित्त कहाँ तक होता है?
प्र.12. देव एक समय में कितनी दूरी तय कर सकता है?
प्र.13. असुरकुमार देव किस निमित्त कहाँ तक गमन करते हैं?
प्र.14. व्यन्तर देवों के निवास कहाँ पर होते हैं?
प्र.15. देवों का आहार किस तरह से और किस तरह का होता है?
प्र.16. भवनवासियों में असुरकुमार आदि देवों के मुकुटों में कौन-से चिह्न होते हैं?
प्र.17. देवगति के देव अत्यन्त शक्तिवान होते हैं तब वहाँ आत्मरक्ष क्यों होते हैं?
प्र.18. देवों के निवास स्थलों के नाम कौन-से होते हैं?
प्र.19. देवों की अपेक्षा मनुष्यों का शरीर उत्कृष्ट क्यों है?
प्र.20. देवों का दिव्य शरीर किस तरह निर्मित होता है?

आधार :आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-' **आगम-अनुयोग**', (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम..... उम्र .....
पिता/माता/पति का नाम .....
पता .....
.....
मोबाईल/फोन नं. .....

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज